सरसों की बीज उत्पादन तकनीक

कृषि कुंभ (जुलाई 2023),
खण्ड 03 भाग 02, पृष्ठ संख्या 47–48

सरसों की बीज उत्पादन तकनीक

डॉ. दिलीप कुमार तिवारी[1], डॉ. हरिकेश[2] एवं सेजल सोमवंशी[3]

[1]सहायक प्राध्यापक, प्रवक्ता कृषि, श्री परमहंस शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय विद्याकुंड, अयोध्या

[2]सहायक प्राध्यापक, प्रवक्ता कृषि आशा भगवान बक्श सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय पूराबाजार– अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत।

[3]एम एस सी सस्य विज्ञान, नैनी कृषि संस्थान, शुआट्स प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: anjeetaraja@gmail.com

देश के कुल कृषि क्षेत्र के 15 प्रतिशत भाग दर तिलहनी फसले उगाई जाती है, अर्थात खाद्यान्न वर्ग की फसलो के बाद इसका दूसरा प्रमुख स्थान है। भारत में सरसों का क्षेत्रफल 7.2 मि0 हेक्टेयर है। जो दुनिया में प्रथम स्थान पर है यह कुल तिलहनी फसलों का 19.2 प्रतिशत है विश्व के सर्वाधिक उतपादक राष्ट्र–चीन, कनाडा, भारत आदि है। भारत में राजस्थान क्षेत्र एवं उत्पादन में प्रथम स्थान पर है तिलहनी फसलों का सफल घरेलू उत्पाद (जी डी पी) में 1.4 तथा कृषि में 7 प्रतिशत हिस्सा है।

बीज उपादन तकनीकि

1. भूमि का चयन

भूमि अच्छी तरह से समतल होनी चाहिए। पिछले वर्षों में दूसरी किस्में इस खेत में न लगाई हो यह सुनिश्चित कर ले। स्वैच्छिक पौधो से बचने का केवल यह एक ही उपाय है। यदि एक ही किस्म उस खेत में पिछले 3–4 वर्षों से लगा रहे हैं तो अच्छी फसल एवं उत्पादन लेने के लिए उस खेत को बदलना बहुत जरूरी है। एवं भूमि कीट, फफूद, बैक्ट्रीया रहित हो तथा भूमि उपजाऊ हो।

2. बुवाई का समय

वर्ष आधारित क्षेत्र– 15 सितम्बर से 15 अक्टूबर सिचित क्षेत्रों में– 30 अकटूबर से पहले।

बीजों का चुनावः–

सरसों बीज उत्पादन में प्रजनन बीज, आधारीय बीज एवं प्रमाणित बीज लेना चाहिए जो की बीज प्रमाणीकरण संस्था से चेक हो।

खेत की तैयारीः–

खेत की सिचाई कर दे ताकि अन्तिम तैयारी से पहले खरपतवार अंकुरित हो जाए। बुवाई से पहले कल्टीवेटर से 1 और 3–4 जुताई हैरो से करनी चाहिए और खेत को समतल कर लेना चाहिए। बीज की बुवाई से पहले खेत की नमी सुनिश्चित कर लें।

बुवाई की विधिः–

बुवाई हमेशा लाइन में करनी चाहिए। खरपतवार निमन्त्रण तथा रोगिंग में सुविधा रहती है। तथा बीज को 2.5 से 3 सेमी की गहराई पर बुवाई करें। बुवाई हमेशा उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर करे फसल गिरने की सम्भवना कम हो जाती है।

बीजों में अलगाव दूरीः

कतार से कतार	–	30 सेमी0
पौध से पौध	–	7.5 से 10 सेमी0
राई– पौध से पौध	–	45 × 10 सेमी0

पीली व भूरी सरसों– पोध से पौध– 30 × 10 सेमी कई प्रजातियों के परागण से बचने के लिए प्रजनल बीज उत्पादन के लिए 400 मीटर की

अलगाव दूरी आवश्यक है एवं प्रमाणित बीज उत्पादन के लिए यह दूरी 200 मीटर रखते है।

बीज की मात्राः–

सरसों की फसल में बीज दर 5–8 किलोग्राम बीज एक हेक्टेयर में प्रर्याप्त होता है।

उर्वरक–

एन0पी0के0– 80, 60, 40 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर एवं 250 किलोग्राम प्सिम का प्रयोग करें।

सरसों की फसल में सल्फर पौधों में रोगों से लड़ने की शक्ति बढाता है। तथा तेल की मात्रा में भी इजाफा होता है। यदि नाइट्रेट के रूप में दिया जाता है तो सल्फर अलग से नही दिया जाना चाहिए।

सिचाईः–

सरसों की फसल में पहली सिंचाई अंकुरण के 30–35 दिनों के बाद करनी चाहिए अगर जरूरत हो तो 55–60 दिनांक के बाद दूसरी सिंचाई की जा सकती है।

सरसों की फसल में 3 इंच से अधिक गहरी सिंचाई नही करनी चाहिए इससे तना गलन रोग को बढाव मिला है।

बीजोउपचार

सरसों के 1 किलोग्राम बीज का 2 ग्राम कार्बोन्डजिम, एवं एप्रोन से उपचारित कर बीज की बुवाई करनी चाहिए। इससे बीज की फसल में कई बीमारियों पर नियंत्रण होता है।

प्रजातियां–

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित किस्में पूसा अग्रणी, पूसा बोल्ड, पूसा महक, पूसा जगन्नाथ, पूसा जय किसान, पूसा बहार, पूसा कल्थानी। तोरिया– टाइप– 9, टाइप– 36 एवं संगम भूरी सरसो–पूसा कल्यानी, बी0एस0एच0–1 पीली सरसों– टाइप–42 एवं के0 88।

अन्य भारतीय किस्में–

वरूणा, दुर्गामाणि, वसुन्धरा, आशीर्वाद, लक्ष्मी, सवर्ण ज्योती, कृष्णा, सीता आदि।

खरपतवार नियंत्रणः–

खरपतवार नियंत्रण हेतु पेन्डामेथालिन का अंकुरण से पहले 1 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करे।

बुवाई के 20–30 दिनों के बाद लाइनो के बीच निराई कर देनी चाहिए।

रोगिंग–

सरसों की फसल में समय से रोगिंग कर देनी चाहिए जिससे फसल की शुद्धता खराब न हो। सरसों के खेत से अपवाछिंत पौधे, अन्य किस्मों के पौधे रोग ग्रस्त पौधे एवं खरपतवार को खेत से निकाल देना चाहिए। इस समय पर रोगिंग का कार्य करना चाहिए।

1. फूलो के निकलने के पहले।
2. फूलो के निकलने के बाद।
3. फसल के परिपक्व होने पर।

रोग एवं रोकथाम–

1. सफेद रोली

एल्बुगो केण्डीडा नामक फफूद द्वारा लगता है। इसी रोकथा के लिए बाविस्टीन 0.3 प्रतिशत का छिड़काव करें एवं बीज उपचार एप्रोन व रिडोमीन 6ग्राम/किलोग्राम से बीज को उपचारित करें।

2. डाउनी मिल्ड्यू–

पेरेनास्पोरा ब्रस्सिकाए फफूंद द्वारा लगता है इसकी रोकथाम के लिए रिडोमिल 0.2 प्रतिशत का छिड़काव करें।

कीट

सरसों का चेपा या मोयला

इसकी रोकथाम के लिए पछेती बुवाई न करें। एवं मिथाइलडेमकटो 675 मिली0 लीटर प्रतिहेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

सरसों की आरा मक्खी

यह हम्येनोपित्रगण का एक ही कीट है जो फसलो को नुकसान पहुँचाता है। इसकी रोकथाम के लिए समय से बुवाई करें।

कटाई एवं थ्रेशिंग

जब पौधे हल्के रंग के और हल्के सुनहरे रंग के दिखई दे तो फसल कटाई के लिए तैयार समझे। फसल को 2–3 दिनांक के लिए फर्श पर सुखाये। सुविधानुसार फसल को डन्डे से थ्रेसर से या ट्रैक्टर द्वारा मड़ाई करें। उचित नमी तक सुखाने के बाद बीजों को भण्डारित कर ले।

उपज

20–25 कुन्तल प्रति हेक्टेयर होती है।